॥श्री॥

॥श्रीवासुदेवपरब्रह्मणेनमः॥

॥पातंजनसूत्रे॥ ॥ ॥॥

॥मुलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृति॥

॥विकृतयःसप्त॥षोडशकस्थविकारो न॥

॥प्रकृति नविकृतिर्नविकारः पुरुषः॥ ॥

॥ अक्षर पुरुष॥ ईश्व॥ ॥ क्षर॥ भागजीव॥

॥ रसाक्षी॥ चैतन्य॥ ॥ ॥यामध्ये नोविसत॥

१ मुलप्रकृति ---- ॥ १ले अंतःकरण ------

७ विकृति ----- १ अहंकार --

१ महत्तत्व ---- २ चित्त -----

१ अहंकार ---- ३ बुधि -----

५ पंचमाहाभूते -- ४ मन -----

४ येकुण अंतःकर्ण

१ पृथ्वि ----

२ आप ---- ५ पंचमाहाभूते --

३ तेज ---- ५ कर्मेंद्रिये ----

४ वायू ---- ५ ज्ञानेंद्रिये ----

५ आकाश ---- ५ प्राणपंचक ----

५

७ २४

१८ सोळा विकार --

५ कर्मेंद्रियें --- सर्वसाक्षी पुरुष २५
५ ज्ञानेंद्रिये --- त्यासच ईश्वर प्रत्यगा
५ प्राणपंचक --- त्मा ॥ म्हणतात ---
१ मन ------
३५
२४

॥ ब्रह्मांडिचे देहे ४ ॥	॥ पिंडिचे देहे ४ ---
१ विराट ------	१ स्थूल ------
२ हिरण्यगर्भ ---	२ सूक्ष्म ॥ लिंगदेहे ॥ ---
३ अव्याकृत ---	३ कारण देहे माया --
४ मुलप्रकृति ---	४ माहाकारण सर्वसाक्षी २५ ईश्वर ---
४	४

॥ या दोहीं सप्रकाराकस अधिष्ठान पर ॥
॥ ब्रह्म ~~घ दोही इन निरवर्ण~~ उत्तम पुरुष ॥
॥ हेच ब्रह्म असलेंति त्यामिप्रकारामानहे ॥
॥ सचिसावे केवल ब्रह्म होय ---

॥ तत्वें ---- ॥

॥ २४ क्षरभागजीन तत्वेचोविस --॥

॥ २५ अक्षरपुरुष ईश्वर साक्षी --॥

॥ २६ केवलसुध ब्रह्म सर्व प्रकाशक ॥
सर्वाधिष्ठान निर्धर्म ----